भारत में वानिकी : वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएं

विषय पर

राष्ट्रीय सम्मेलन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान,शिमला ,द्वारा दिनांक 15 से 18 नवम्बर 2016 तक शिमला में भारत में वानिकीः वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर के वानिकी के क्षेत्र कार्य कर रहें लगभग 100 वैज्ञानिकों शिक्षाविदों, वन अधिकारियों एवं अनुसंधानकर्ताओं के भाग लिया । 15 नवम्बर २०१६ संगोष्ठी के प्रथम दिन डा० वी०पी०तिवारी ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया । प्रो० डी० एन० बाजपेयी, माननीय उप कुलपति, हि०प्र० विश्वविघलय ने सम्मेलन का शुभारंभ किया । अपने सम्बोधन में प्रो० बाजपेयी ने वनों को ग्रामीण एवं जनजातिय लोगो की अजीविका का प्रमुख स्त्रोत बताया । उन्होंने प्रतिभागियों का जलवायु परिवर्तन तथा वनस्पति में इसके प्रभाव पर ध्यान आकर्षित किया । उन्होने कहा कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की भविष्यवाणी में अनिश्चितत्ताएं होती हैं तथा अनुकुलता पर सम्भावित नीतियों के बारे में योजनाओं में प्रत्यक्षता से काफी अधिक है ।

डा० डी० एन० तिवारी, पूर्व सदस्य योजना आयोग भारत सरकार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की उन्होने एच०एफ०आर०आई० के प्रयासों की सराहना की तथा आशा जताई कि सम्मेलन से प्राप्त सुझाव भविष्य में वानिकी क्षेत्र में नितियों को तय करने में सहायक होंगी । डा० अजय कुमार लाल निदेशक , पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौघिगिकी हि० प्र० ने मुख्य प्रारंभिक संबोधन दिया । डा० राजेश शर्मा, आयोजक सचिव ने धन्यवाद पेश किया ।

डा० डी० एन० तिवारी, मुख्य वक्ता पूर्ण सत्र ने वानिकी का सत्तत विकास उद्देश्य में रोल पर व्याख्यान दिया तथा इको टूरिज्म का संरक्षण एवं सतत ग्रामीण आजिविका वर्धन की महत्ता पर बल दिया । डा० के० डी० सिंह, FAO फोरेस्ट्री विभाग ने समकालीन वानिकी क्षेत्र के सामूहिक मूल्यांकन तथा कृषि वानिकी एवं गैर वन अकाष्ठ उत्पाद के वर्धन पर बल दिया । डा० प्रमोद कान्त, निदेशक, ग्रीन इकॉनिकी संस्थान, नई दिल्ली ने हिमालयन वनों का जलवायु परिवर्तन संरक्षण एवं वानिकी क्षेत्र में दीर्घकालिक निवेश के संदर्भ में व्याख्यान दिया । डा० अजय कुमार लाल, निदेशक, पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौघिगिकी हि० प्र० ने हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में जैवविविधता संरक्षण, अवसर एवं चुनौतियों पर व्याख्यान दिया ।

शोध पत्रों की प्रस्तुतियों को छः शीर्षाकों में वर्गिकृत किया जैसे कि 'वन एवं वृक्ष प्रबन्धन' 'औषधिय पौधों का संरक्षण कृषिकरण तथा प्रबन्धन तकनीक,' 'वन वृक्ष वन एवं जलवायु परिवर्तन' 'जैव विविधता संरक्षण तथा वृक्ष अनुवाशिकी के संदर्भ में मुल्यांकन एवं सुधार नितियां/समवर्ती । तकनीकी सत्रों में कुल 48 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए । जिसमें कि 17 शोध पत्र वन एवं वृक्ष घेरा प्रबन्धन , 06 औषधिय पौधों का संरक्षण कृषिकरण तथा प्रबन्धन तकनीक , 10 गैर वन वृक्ष में 03 वन एवं वृक्ष घेरा प्रबन्धन, 06 औषधीय पौधों का संरक्षण कृषिकरण तथा प्रबंधन तकनीक, 03 वन एवं जलवायु परिवर्ता, 09 जैव विविधता संरक्षण तथा 03 वृक्ष अनुवांशिकी के संदर्भ में मूल्यांकन एवं सुधार नितियां सम्मिलित थे । इसके अतिरिक्त पोस्टर सत्र का आयोजन किया गया जिसमें प्रतियोगियों द्वारा विभिन्न शीर्षकों के पोस्टर प्रस्तुत किए गए । वैज्ञानिक समिति ने पोस्टरों का आंकलन किया तथा तीन श्रेष्ठ पोस्टरों को सम्मानित किया गया ।

डा० वी०पी० तिवारी निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने समापन सत्र के दौरान वन परिस्थितिक तंत्र के महत्व प्रकाश डाल तथा बदलते जलवायु परिस्थितियों, व्यापक विकास तथा सामाजिक जरूरत वृद्धि के हिसाब से बेहतर प्रबंधन पर बल दिया । विश्व में तापमान वृद्धि से होने वाले नुकसान का नितिकारों का आधुनिक युग में बनों की महत्व पर रूची लेने पर सबका ध्यान केन्द्रीत किया तथा वन प्रबंधन के बेहतर तरीके इजाद करने पर बल दिया । उन्होंने इसे सम्मेलन आयोजित करने की मुख्य बजह बताया तथा सभी को सम्मेलन में रूची दिखाने पर प्रसन्नता व्यक्त की ।

संगोष्ठी की मुख्य संतुतियांः-

1. कृषि वानिकी एवं गैर अकाष्ठ वन उत्पाद को बढ़ावा देने एवं प्रभावी विपणन रणनीति विकसित करने की आवश्यकता ।
2. स्तत आधार पर इको टूरिज्म को धार्मिक गतिविधियों के साथ इसको पूर्ण वृद्धि हेतु जोड़ा जाना चाहिए ।
3. वैज्ञानिक हस्तक्षेप तथा लोगों की सहभागिता से वन प्रबंधन द्वारा उपयुक्त एवं सक्षम तरीके तथा मॉडल अपनाने चाहिए ताकि वनों पर दबाव कम हो सके ।
4. एलियन इनवेसिव प्रजातियों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ।
5. हिमालयन क्षेत्र के बान और पाइनस पर Pityogerous का जलवायु परिवर्तन के अनुरूप संक्रमण के प्रभाव को समझने के लिए तकनीकों का दोबारा मूल्यांकन करना क्योंकि जलवायु परिवर्तन आजकल का ज्वलंत मुद्दा है ।
6. औषधीय पौधों के संरक्षण, पैदावार तथा इसके उपरांत की तकनीकों को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करना ।
7. सहभागिता द्वारा जैव- भौगोलिक क्षेत्र के अनुरूप गंभीर रूप से विलुप्त प्रजातियों के लिए संरक्षण की तकनीकों का विकास एवं सत्यापन ।
8. गैर वन वृक्षों के संरक्षण एवं उत्पादकता विषयों पर ध्यान केन्द्रित कर, समाधान खोजना ।
9. जलवायु परिवर्तन से कीटों/ बीमारियों के प्रकोप पर अध्ययन व जांच करने की आवश्यकता है ।
10. स्थानीय प्रजातियों के सुधार तरीकों के विकास पर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है ।
11. निजी क्षेत्रों के अनुसंधान संस्थाओं को अनुसंधान संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए उनके अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को वित्तिय सहायता प्रदान करनी चाहिए ।

कार्यक्रम के अंत में डॉ कुलराज सिंह कपूर, समुह समन्वयक अनुसंधान ने सम्मेलन में भाग लेने वाले वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों अधिकारियों तथा इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंट मीडिया से पत्रकारों का धन्यावद किया तथा आशा व्यक्त की कि इस सम्मेलन से प्राप्त होने वाली अनुशुंसाओं से सरकार को भविष्य में वानिकी से सम्वधित योजनाएं बनाने में अवश्य सहायक सिद्ध होंगी ।

GLIMPSES OF NATIONAL CONFERENCE

CH INSTITUTE

Dr. D.N. Tewari
CHAIRMAN
Dr. Pramode Kant

EXHIBITION
BASH
CHEMO-AGENCIES
SANJAULI, SHIMLA
Biovis

PELICAN EQUIPMENTS
KELPLUS
India's Largest Selling Nitrogen/Protein Analyser
SOCS PLUS
Automatic Solvent Extraction System
World class Standards for Lasting performance
FIBRA PLUS
Automatic Fibre Estimation System
Expression of Creative Genius

हि.व.अ.सं.
HFRI

MECHANISM
•Primary Metabolism
✓Secondary Metabolism (Adaptive significance)
•Shikimic acid pathway, Malonic acid pathway etc.
Till early 20th century, these chemicals supposed to be metabolic wastes but now - Plant Defense, Medicinal compounds.
Allelochemicals
○Phenolic compounds
○Terpenes
○Nitrogen- containing compounds
Allelopathy in trees and forests is a important health care issue.
HFRI

FORESTRY IN INDIA
Current Challenges and Future Prospects
November 15-18, 2016
HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE

Supported by
SERB
IUFRO

Sh. K.D. Singh
Sh. V. P. Mohan
Dr. D.N. Tewari

SARA (Society for Afforestation, Research & Allied Works), Dandeli
Supported by The West Coast Paper Mills Ltd. Dandeli

National Conference
on
FORESTRY IN INDIA:
Current Challenges and Future Prospects
HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE, SHIMLA
IUFRO

सम्मेलन एचएफआरआई में वानिकी चुनौतियां, भविष्य की संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन, एचपीयू कुलपति रहे विशेष अतिथि

वानिकी उत्पादों का विवेकपूर्ण तरीके से हो उपयोग

सिटी रिपोर्टर | शिमला

भारत में वानिकी वर्तमान चुनौतियां एवं भविष्य की संभावनाएं, विषय पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में मंगलवार को राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। 18 नवंबर तक चलने वाले चार दिवसीय इस सम्मेलन का उद्घाटन एचपीयू के उपकुलपति प्रो. एडीएन वाजपेयी ने किया।

उन्होंने अपने संबोधन में वानिकी क्षेत्र के प्रमुख पहलुओं को चिह्नित करते हुए पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वैज्ञानिकों की कार्य प्रणाली, सतत विकास, जैव विविधता तथा इस क्षेत्र के दार्शनिक स्वरूप की अति रोचक व ज्ञान वर्धक तरीके से व्याख्या की। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में वानिकी से प्राप्त उत्पादों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है, जिससे इस क्षेत्र पर बढ़ते दबाव व अवनीकरण को कम किया जा सके।

मानव पलायन की समस्याओं को किया उजागरः संगोष्ठी में पूर्व योजना आयोग भारत सरकार के सदस्य डॉ. डीएन तिवारी ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम वनों की प्रधानता व जलवायु परिवर्तन तथा विविध कारणों से मानव पलायन की समस्याओं को उजागर किया। उन्होंने ने कहा कि भारत सरकार ने वानिकी नीति में 20 वर्षों के अंदर वन आवरण को 35 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य स्थापित किया था। जबकि हम केवल 25.8 प्रतिशत का हासिल कर सके हैं। डॉ. तिवारी ने

राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर किताब का विमोचन करते मुख्यतिथि व अन्य।

कहा कि अब वानिकी क्षेत्र को विश्व स्तर पर प्रत्येक दो वर्षों में आकलन किया जा रहा है। इसलिए हमें अधिक सजग व सार्थक सोच लेकर कार्य करने की आवश्यकता है।

एचएफआरआई के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने मुख्यातिथि और राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रतिभागियों का अभिनंदन तथा स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण के दौरान उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिकों, वन अधिकारियों और अन्य हित धारकों को एक मंच प्रदान करना है तथा जैव विविधता की स्थिति, निगरानी व मूल्यांकन तकनीक, आनुवांशिक सुधार और जंगलों के बाहर पाए जाने वाले वृक्षों का प्रबंधन, औषधीय पौधों का संरक्षण एवं खेती, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार रणनीति पेड़ आनुवांशिकी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना है।

विशेषज्ञ करेंगे शोध प्रस्तुतः सम्मेलन के दौरान विषय विशेषज्ञ अपने अनुसंधान पर आधारित लेख प्रस्तुत करेंगे तथा अपने अनुभवों को सभी प्रतिभागियों के साथ सांझा करेंगे। उन्होंने बताया कि सम्मेलन के दौरान विभिन्न विभागों की ओर से शैक्षणिक और सूचनात्मक सामग्री जैसे उत्पादों, उपकरणों और पुस्तकों के लिए प्रतिभागियों की व्यापक रेंज शामिल है, को भी प्रदर्शित करने की सुविधा भी प्रदान की जाएगी।

शिमला

आयोजन | किसानों-बागवानों के आय में बढ़ोतरी के लिए इको-टूरिज्म जरूरी

शोध में रखा सुझाव, इको-टूरिज्म से सुधर सकती है प्रदेश की आर्थिकी

एचएफआरआई में राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से भारत में वानिकी वर्तमान चुनौतियां एवं भविष्य की संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हो गया। इसमें देशभर के वानिकी के क्षेत्र कार्य कर रहे लगभग 105 वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, वन अधिकारियों एवं अनुसंधानकर्त्ताओं ने भाग लिया। दूसरे दिन पूर्ण अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय योजना आयोग के पूर्व सदस्य डॉ. डीएन तिवारी ने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से संबंधित विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सुझाव दिया कि ग्रामीणों, किसानों तथा बागवानों के आय में बढ़ोतरी के लिए इको-टूरिज्म को अपनाना बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर को ध्यान में रखते हुए इन्हें यदि इको-टूरिज्म के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि आम जनता इस गतिविधि से लाभ उठा सके।

एचएफआरआई में आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मौजूद वैज्ञानिक।

इन पर भी हुई चर्चा

संगोष्ठी की मुख्य स्तुतियों में कृषि वानिकी और गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद को बढ़ावा देने और प्रभावी विपणन रणनीति विकसित करने की आवश्यकता, कृषि वानिकी और गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद की जरूरत , पारिस्थितिकी पर्यटन संभावित क्षेत्रों में इसके प्रचार के लिए धार्मिक गतिविधियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। वनों पर दबाव को कम करने के लिए उपयुक्त मॉडल और वैज्ञानिक उपायों को अपनाया जाना, वन प्रबंधन के लिए लोगों की भागीदारी सुनिश्चित किया जाना, इनवेसिव प्रजातियों पर विशेष ध्यान देने पर आम सहमति, निचले पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों के लिए शीशम की विभिन्न प्रजातियों को उगने की जरूरत, शीशम की उन्नत किस्मों के बागानों को बड़े पैमाने पर भविष्य में स्थापित किए जाने की आवश्यकता, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और बान और पाइस पर के संक्रमण के प्रभाव को भी समझने की भी आवश्यकता पर बल दिया गया।

ये किए शोध प्रस्तुतः डॉ. डीएन तिवारी, पूर्व सदस्य योजना आयोग केंद्र सरकार, डॉ. केडी सिंह पूर्व-निदेशक वानिकी विभाग खाद्य एवं कृषि संगठन, रोम, डॉ. प्रमोद कांत निदेशक ग्रीन इकॉनमी संस्थान, डॉ. वीपी मोहन एवं डॉ. एसपी वासुदेवा पूर्व प्रधान-मुख्य अरण्यपाल, डॉ. एचएस गुप्ता अतिरिक्त प्रधान-मुख्य अरण्यपाल झारखंड, केडी शर्मा अतिरिक्त प्रधान-मुख्य अरण्यपाल गुजरात, डॉ. अजय कुमार लाल निदेशक विज्ञान एवं तकनीक विभाग हिमाचल प्रदेश, जीआर साहिबी मुख्य अरण्यपाल, डॉ. एके पाण्डेय, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. ओमबीर सिंह, डॉ. विजेंदर पाल पंवार, वरिष्ठ वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान देहरादून, डॉ. रंजना आर्य वरिष्ठ वैज्ञानिक शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर, डॉ. एसके शर्मा एवं डॉ. एसआर शुक्ला प्रधान वैज्ञानिक काष्ठ एवं प्रौद्योगिकी विज्ञान संस्थान बैंगलोर तथा देश के अन्य जाने-माने अनुसंधान संगठनों के वैज्ञानिक भी इस संगोष्ठी में उपस्थित रहे तथा विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

70 लेख किए गए प्रस्तुत

ग्रीन इकॉनामी संस्थान के निदेशक डॉ. प्रमोद कांत ने हिमालयन वनों का जलवायु परिवर्तन अनुकूलता तथा न केवल संरक्षण एवं विकास का दीर्घ निवेश पर व्याख्यान दिया। हिमाचल प्रदेश पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के निदेशक डॉ. अजय कुमार लाल ने हिमाचल प्रदेश में जैव-विविधता संरक्षण अवसर एवं चुनौतियों पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने जैव-विविधता के संरक्षण एवं लोगों को इसके व्यवसायिक जानकारी के बारे में जागरूक होने पर बल दिया। इस सम्मेलन में वानिकी से संबंधित लगभग 70 अनुसंधान लेख प्रस्तुत किए गए। सम्मेलन के दौरान वानिकी एवं इससे जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तृत प्रस्तुतियां दी गई।

शिमला में राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

संवाददाता

शिमला, 15 नवंबर। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा मंगलवार से 18 नवंबर तक शिमला में भारत में वानिकी एवं वर्तमान चुनौतियां एवं भविष्य की संभावनाएं विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. एडीएन बाजपाई उपकुलपति हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. बाजपाई ने कहा कि भारत में वानिकी एवं महत्वपूर्ण ग्रामीण उद्योग हैं। इस समारोह में मुख्य अतिथि ने अपेन उद्घाटन में वानिकी क्षेत्र के प्रमुख पहलुओं को चिन्हित करते हुए पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों में वैज्ञानिकों की कार्य प्रणाली, सतत विकास, जैव विविधता तथा इस क्षेत्र के दार्शनिक स्वरूप की अतिरोचक व ज्ञान वर्धक तरीके से व्याख्या की। विकास का मुद्दा नितांत आवश्यक है तथा हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में यह सर्वोच्च प्राथमिकता रहती है, परंतु इसे प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित कर कार्यान्वित करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि रस्म अदायगी के लिए वृक्ष लगाने से वन रोपण का महत्वकांक्षी लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी कारणवश नीति निर्धारण व व्यावहारिक स्तर पर अंतर बना रहता है। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में वानिकी से प्राप्त उत्पादों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है, जिससे इस क्षेत्र पर बढ़ते दबाव व अवनीकरण को कम किया जा सके। इस परिपेक्ष्य में बाजपाई ने कहा कि मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह की पहल पर वर्षों पहले यहां प्रारंभिक विरोध के बावजूद बागबानी क्षेत्र में उपयुक्त की जाने वाली लकड़ी की पेटियों के स्थान पर अन्य वैकल्पिक स्त्रोतों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने नीति निर्धारकों को वनों के संरक्षण पर विशेष ध्यान देने का भी आह्वान किया। संगोष्ठी में डा. डीएन तिवारी, पूर्व योजना आयोग, भारत सरकार के सदस्य भी उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में सर्वप्रथम वनों की प्रधानता व जलवायु परिवर्तन तथा विविध कारणों से मानव पलायन की समस्याओं को उजागर किया।

प्रकृति के साथ समन्वय बिना असंभव है विकास : वाजपेयी

राष्ट्रीय कांफ्रेंस में भारत में वानिकी विषय पर साझा किए विचार

विशेषज्ञों ने कहा, सिर्फ पौधरोपरण से ही नहीं होगा वनों का संरक्षण

अमर उजाला ब्यूरो

शिमला।

देश में वनीकरण को लेकर वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं को लेकर शिमला स्थित हिमाचल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट (एचएफआरआई) ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय कांफ्रेंस करवा रहा है। मंगलवार को कांफ्रेंस का उद्घाटन एचपीयू के कुलपति प्रो. एडीएन बाजपेयी ने किया।

कहा कि प्रकृति के साथ समन्वय बनाए बिना देश में विकास की कल्पना करना असंभव है। रस्म अदायगी के लिए पौधा लगाने से वन संरक्षण और विस्तार का महत्वाकांक्षी लक्ष्य नहीं पाया जा सकता। इसी कारणवश नीति निर्धारण और व्यवहारिक स्तर पर अंतर बना है। प्रदेश में वानिकी से प्राप्त उत्पादों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है। सीएम वीरभद्र सिंह ही थे, जिन्होंने पेड़ कटान के प्रति संजीदगी दिखाते हुए सेब के लिए बनने वाले बॉक्स को लकड़ी से बनना बंद कराया। उन्होंने नीति निर्धारकों को वनों के संरक्षण पर विशेष ध्यान देने का भी आह्वान किया।

कांफ्रेंस में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे योजना आयोग के पूर्व सदस्य डॉ. डीएन तिवारी ने वनों की प्रधानता, जलवायु परिवर्तन तथा विविध कारणों से मानव पलायन की समस्याओं को उजागर किया। कहा कि भारत सरकार ने वानिकी नीति में 20 वर्षों के अंदर वन आवरण को 33 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा था, जबकि हम केवल 25.8 प्रतिशत हासिल कर सके हैं। अब वानिकी क्षेत्र का विश्व स्तर पर प्रत्येक दो वर्षों में आंकलन किया जा रहा है, इसलिए अधिक सजग और सार्थक के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। एचएफआरआई के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने भी ऐसे सेमीनारों के आयोजनों पर जोर दिया। तीन दिवसीय कांफ्रेंस में देशभर से वन से जुड़े विशेषज्ञ चर्चा के लिए पहुंचे हैं।

विशेषज्ञों की राय — हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में आयोजित हुआ सेमिनार

ईको टूरिज्म बढ़ने से बढ़ेगी ग्रामीणों की आय

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

ग्रामीणों की आय बढ़ोतरी के लिए ईको टूरिज्म को बढ़ावा देना जरूरी है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के सेमिनार के समापन पर विशेषज्ञों ने अपनी राय रखी। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में 'भारत में वानिकी की वर्तमान चुनौतियां एवं भविष्य' पर सेमिनार का समापन शुक्रवार को हुआ। इसमें देश भर के वानिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे लगभग 105 वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, वन अधिकारियों एवं अनुसंधानकर्ताओं ने भाग लिया। सेमिनार के दौरान डॉ. डीएन तिवारी, पूर्व सदस्य, योजना आयोग, भारत सरकार ने अपने संबोधन में जलवायु परिवर्तन से संबंधित विस्तृत जानकारी साझा की तथा सुझाव दिया कि ग्रामीणों, किसानों तथा बागवानों के आय में बढ़ोतरी के लिए ईको-टूरिज्म को अपनाना बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। संगोष्ठी की मुख्य संस्तुतियों में, कृषि वानिकी और गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद को बढ़ावा देने और प्रभावी विपणन रणनीति विकसित करने की आवश्यकता, कृषि वानिकी और गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद की जरूरत, पारिस्थितिकी पर्यटन संभावित क्षेत्रों में इसके प्रचार के लिए धार्मिक गतिविधियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जैव-भौगोलिक क्षेत्र के लिए विशिष्ट गंभीर लुप्तप्रायः प्रजातियों के संरक्षण हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना, वनों के बाहर पाए जाने वाले वृक्षों के संरक्षण एवं उत्पादन पर विशेष ध्यान देना आदि सम्मिलित है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. कुलराज सिंह कपूर, समूह समन्वयक अनुसंधान ने सम्मेलन में भाग लेने वाले वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

एड्स के खिलाफ जागरूक करेंगे स्कूली बच्चे

शिमला। पहली दिसंबर को मनाए जाने वाले एड्स डे के खिलाफ स्कूली बच्चे जनता को जागरूक करेंगे। उच्च शिक्षा विभाग ने इसे लेकर सभी डिप्टी डायरेक्टरों को यह कहा है कि वे एक माह के एक्शन प्लान को एड्स कंट्रोल सोसायटी के समक्ष पेश करें। इसमें शिक्षा अधिकारी और स्कूली बच्चे इस अभियान में कैसे मददगार साबित हो सकते हैं, इस पर एक रिपोर्ट तैयार करें। एड्स कंट्रोल सोसायटी का मानना है कि शिक्षा विभाग जनता को बेहतर तरीके से एड्स से बचने के टिप्स दे सकता है। इसके लिए सोसायटी ने विभाग को एड्स जागरूकता सामग्री भी सौंप दी है। इस पर एक्शन प्लॉन बनाने के लिए निर्देश जारी किए गए हैं।